International Research Journal of Education and Technology

Peer Reviewed Journal, ISSN 2581-7795

# 'नागार्जुन के काव्य में किसान और श्रमिक जीवन की अभिव्यक्ति: एक विशेष अध्ययन'

## Expression of Farmer and Labor Life in Nagarjuna's Poetry: A Special Study

डॉ. शैलकुमारी अहिरवार

प्रभारी प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय मझगवां, जिला सतना (म. प्र.)

**सारांश**:– आधुनिक हिंदी काव्य में बाबा नागार्जुन एक ऐसे लोकप्रिय कवि के रूप में सामने आते हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के द्वारा सीधी-सादी जनता को जगाने का काम किया है। कुछ उनकी कविताएं हैं जो किसान और श्रमिकों के दु:ख – दर्द, समस्या, भुखमरी, विषमता, शोषण, बेकारी, आर्थिक असमानता आदि को न केवल देखा है, बल्कि उन्होंने किसानों, मजदूरों की समस्याओं को समझते हुए अपने काव्य का विषय बनाया है। जिससे कमजोर कृषक, श्रमिक को उनके वास्तविक अधिकार से अवगत कराया जा सके। और वह अपने हक की लड़ाई लड़ सके। कवि नागार्जुन के काव्य में सिर्फ किसान, श्रमिक को असहाय के रूप में ही नहीं बल्कि संघर्षशील और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उद्घाटित किया है।

उनकी कविताओं में शोषित वर्ग संघर्षरत है वह अपनी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी स्थितियों में संघर्ष करता हुआ नजर आता है। कवि ने इस शोषण के खिलाफ तीखे स्वर में व्यंग्य किया है। इस शोध पत्र में कवि नागार्जुन के काव्य में अंतर्निहित किसान और श्रमिक जीवन की दशा और संघर्षशीलता के विभिन्न आयामों और उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। जिससे उसकी जनवादी चेतना और प्रगतिशील दृष्टि का स्पष्ट बोध होता है।

**मुख्य शब्द:**– किसान जीवन, जनवादी कविता, प्रतिवाद, श्रमिक चेतना, सामाजिक यथार्थ, वर्ग संघर्ष, सामाजिक, परिवर्तन।

**भूमिका**:– आधुनिक कालीन साहित्य परिवर्तनकारी साहित्य के रूप में सामने आता है। इस काल में नागार्जुन ऐसे काव्यकार के रूप में उभरते हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं में किसान – श्रमिक की आवाज उठाया है। उनकी विविध समस्याओं को देश और समाज के सामने लाते हैं। तथा शोषण करने वाले वर्ग के विरोध में किसान, मजदूर तथा कमजोर वर्ग को बोलने का हौसला अफजाई करते हैं। नागार्जुन का दृष्टिकोण जमींदारी प्रथा, ग्रामीण निर्धनता, औद्योगिकरण, पूंजीवाद, औपनिवेशिक शोषण इन सब ने गरीब, मजदूर, किसान, श्रमिक, वंचित वर्ग को प्रताड़ित किया है। जिसके कारण आज के वर्तमान संदर्भ में भी इनकी दशा दैयनीय बनी हुई है। उनका काव्य साहित्य सामान्य जनजीवन को जागरूक करने के साथ-साथ किस प्रकार से हम शोषण करने वालों का विरोध कर, अपने हक अधिकार को प्राप्त कर सकते है, नागार्जुन की कविता इस बात का संदेश देती है। वे गांव

में निवास करने वाले शोषित, वंचित, श्रमिक, मजदूर, खेत – खलिहान, कच्चे मकान, अकाल, भुखमरी, दरिद्रता, श्रम संघर्ष भूख को इस तरह चित्रित करते हैं जैसे उन्होंने स्वयं ऐसा जीवन जिया हो।

नागार्जुन ने अपने काव्य को सिर्फ सौंदर्यबोध ना मानकर उसमें सामाजिक तत्वों को समाहित किया है। जिसमें व्यक्ति की हर समस्या स्पष्ट रूप से उजागर होती है। उनकी कविताएं गांव की सीधी-साधी सरल जनता को जागृत करने और उनके साथ सदियों से हो रहे अन्याय, शोषण के विरुद्ध खड़ा होने व अपनी लड़ाई मजबूती से लड़ने का साहस सुदृढ़ करती है। और राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ अपना कड़ा विरोध जताती है। वे राजनीति सत्ता के दमनकारी प्रभाव तथा सामाजिक कुरीतियों के बढ़ते अत्याचार को सामान्य जनता तक पहुंचाने के लिए अपने काव्य का विषय बनाकर पाठकों को इस संदर्भ में सोचने पर मजबूर कर दिया है। ताकि जनता इनकी शोषणकारी नीतियों को समझ सके और अपना पक्ष मजबूती से रख सके। इनकी कविता विशेष रूप से किसान और श्रमिक के जीवन की अभिव्यक्ति को दर्शाती है। किसान, मजदूर, श्रमिक की समस्या से पूरित यह काव्य संसार न सिर्फ उनके समय का लिखित प्रमाण है, बल्कि आज भी इनके दमन की कहानी प्रस्तुत करता है।

इस दशा में नागार्जुन का काव्य 'किसान और श्रमिक जीवन की अभिव्यक्ति' विषय पर अध्ययन अति महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह न सिर्फ हाशिए पर खड़े समाज की समस्या को दिखाता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि साहित्य किस प्रकार इनकों जीवन सवारने का मार्ग प्रशस्त करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य नागार्जुन के काव्य में किसान और श्रमिक जीवन की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करना है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि उनकी कविता भारत के ग्रामीण समाज की वास्तविकता को किस प्रकार दर्शाती है।

**कृषक जीवन का यथार्थ चित्रण:–** 'फसल' कविता का प्रश्न है कि फसल क्या है? अर्थात फसल केवल कृषि उत्पादन तक सीमित नहीं है। यह किसी एक व्यक्ति, एक तत्व या फिर एक ही कारण का परिणाम न होकर कई नदियों के जल, अनगिनत हाथों के श्रम और हजारों खेतों की मिट्टी के गुण धर्म का संयुक्त रूप है। इसमें सामूहिक श्रम का सम्मान भी स्पष्ट झलकता है। यह श्रम सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के रूप में भी दिखाई देता है–1एक की नहीं,

दो की नहीं,

ढेर सारी नदियों के पानी का जादू"

2 बहुत दिनों के बाद,

अबकी मैने जी भर देखी,

पकी – सुनहली फसलों की मुसकान।


© 2026, IRJEdT

बहुत दिनों के बाद.....

कवि नागार्जुन का मानवीय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह दिखाता है की फसल केवल किसान का परिश्रम नहीं बल्कि मिट्टी, जल, वायु आदि प्राकृतिक तत्वों के सहयोग का फल है। इसकी भाषा अत्यंत सरल और स्पष्ट है जिससे पाठकों को समझने में कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। किसी प्रकार की जटिलता नहीं है फिर भी भाव अति गहरे हैं। कुछ ऐसे शब्द हैं, जैसे – लाख – लाख, कोटि – कोटि जो सामूहिक व्यापकता और विस्तार का बोध कराते हैं। कविता भारतीय कृषक जीवन, प्राकृतिक संवेदना और सामूहिकता की भावना का सशक्त उदाहरण है। दूसरी ओर जब किसान की फसल पक जाती है तब उसको बहुत आनंद होता है क्योंकि उसमें उसका खून–पसीना, उसकी मेहनत और जिंदगी की कमाई लगी होती है।

'अकाल और उसके बाद' कविता हिंदी की जनवादी काव्यधारा की सबसे हृदयस्पर्शी रचनाओं में जानी जाती है। यह कविता अकाल जैसी महामारी को सिर्फ प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि आर्थिक, सामाजिक असफलता के रूप में सच्चाई को सामने लाती है। नागार्जुन ग्रामीण समुदाय के लोगों से गहराई से जुड़े हैं। उन्होंने गरीब, मजदूर, किसान, वंचित शोषित वर्ग की समस्या को बहुत निकट से अनुभव किया है। वे अकाल (भुखमरी) की स्थिति और उसके बाद घर में अनाज आने पर जो खुशी होती है। उसका चित्रण मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके समय में लोगों के सामने जो गरीबी, अकाल, बेरोजगारी, शोषण, अन्याय, अत्याचार की भयावह स्थिति थी उसको यथार्थवादी दृष्टि से इस कविता के माध्यम से दर्शाया गया है–

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुत्तिया, सोई उसके पास।

कवि कहते हैं कि भूख की आग कितनी भयावह होती है। अन्न का मानव के जीवन में कितना महत्व है। यहां तक कि पशु – पक्षी, कीड़े – मकोड़े, भी भोजन की आस लगाए बैठे हुए हैं। अन्न – जल के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इस प्रकार अभावग्रस्त जनता की आवाज उठाना उसे शासन, सत्ता तथा जिम्मेदार लोगों तक पहुंचाना कवि का कर्म बन जाता है। जिससे इस भयंकर भुखमरी से गरीब, शोषित वर्ग को उबारा जा सके। वर्तमान समाज में किसान आंदोलन, मजदूरों की समस्याएं, महंगाई की मार, आर्थिक असमानता और सामाजिक न्याय की मांग देश तथा समाज के सामने स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस कविता में किसी एक घटना का चित्रण नहीं अर्थात भारतीय समाज में ग्रामीण जनसामान्य के साथ बार-बार ऐसी घटनाएं घटित होती रहती हैं। नागार्जुन कहीं ना कहीं जनता को यह साहस देने का काम किया है कि हमारी कहानी सिर्फ भूख की नहीं है बल्कि आशाएं और आकांक्षाए भी इसके साथ जुड़ी हुई है। उनका मानना है की रोटी सिर्फ हमारे लिए भोजन नहीं, बल्कि हमारा मान सम्मान भी है।

यह कविता सतह पर किसान के दोपहर के समय की स्थिति को दर्शाती है। साथ ही यह कवि के सजगता को भी दर्शाती है, कि एक कृषक को खेत में अन्न उगाने में कितना ध्यान रखना पड़ता है। अगर उगने वाली फसल में किसान लगन व समय से खेती का काम ना करें, तो उसको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए अक्सर देखा जाता है कि अपनी फसल के पैदावार के लिए कृषक को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कवि नागार्जुन की कविता 'अपने खेत में' वे कहते हैं–

अपने खेत में हल चला रहा हूं

इन दिनों बुवाई चल रही है

इर्द-गिर्द की घटनाएं ही

मेरे लिए बीज जुटाती हैं

हां, बीच में घून लगा हो तो

अंकुर कैसे निकलेंगे।

कविता में 'इत्मीनान' शब्द यह स्पष्ट करता है कि किसान को कोई जल्दी नहीं है। वह समझबूझ कर धैर्यपूर्वक अपनी 'कृषि' का कार्य कर रहा है। कवि बताना चाहते हैं कि उनकों अनुभव की कोई कमी नहीं है। उन्हें इस कार्य में पहले से ही महारत हासिल है। इस कविता के माध्यम से यह बताया गया है, कि यहां जन सामान्य पूर्व से ही कठिनाइयों का सामना करता आ रहा है। व्यक्ति सिर्फ कल्पना की उड़ान पर नहीं, बल्कि अनुभव की धरा पर खड़ा है। वह दिखावे के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता। अगर मनुष्य 'बाजारू फैशन' में ना पड़े तो उसके जीवन की कई समस्याएं आप ही दूर हो जाएंगी। आज का दौर दिखावे का दौर है, इस कारण से हर मानव कहीं ना कहीं कठिनाइयों से ग्रसित रहता है। यदि व्यक्ति के विचार सही नहीं होंगे तो आगे चलकर उसे समस्या का सामना करना होगा, और यदि हमारे विचार उत्तम है तो हमारी समस्याएं भी कम हो सकती हैं। कविता में किसान के श्रम का दृश्य प्रस्तुत करते हुए दरअसल काव्यकार की आत्म की प्रतिबद्धता को इंगित किया गया है।

नागार्जुन हिंदी और मैथिली के ऐसे कवि हैं, जिन्हें 'जनकवि' कहा जाता है। वे राजनीतिक सत्ता के विरोध में, अपनी कविता में व्यंग के माध्यम से सरकार को कमजोर वर्ग का ध्यान न देने की बात कहते हुए उसे जगाने का काम किया है। देश की आपातकालीन स्थितियों में, किसान और मजदूर की स्थिति और भी दयनीय हो जाती है। वह खाने के लिए भोजन की व्यवस्था भी नहीं जुटा पाता। वे किसानों के आंदोलन के विभिन्न मुद्दों में, और सामाजिक अन्याय के खिलाफ खुलकर अपनी बात कविता के माध्यम से रखते आए हैं। उनकी कविता का एक उदाहरण–


© 2026, IRJEdT

□मुन्ना, मुझको

पटना-दिल्ली मत जाने दो

भूमिपुत्र के संग्रामी तेवर लिखने दो

पुलिस दमन का स्वाद मुझे भी तो चखने दो

मुन्ना, मुझे पास आने दो

पटना-दिल्ली मत जाने दो।□

नागार्जुन नाम आते ही कविता में अपने आप खेत – खलिहान, मजदूर, श्रमिक, शोषित, वंचित, और हाशिए पर खड़े जनसमूह का दर्द उभर आता है। इस कविता में कवि का 'आत्मीय' संबोधन जान पड़ता है। वह कह रहे हैं कि मुझे अपना घर गांव छोड़कर मत जाने दो क्योंकि शहरों में सत्ता का बोलवाला अधिक रहता है। इसलिए मैं अपने गांव में रहकर ही लोगों के लिए संघर्ष करना चाहता हूं। वह सत्ता के लालच में ना आकर अपनी कड़ी मेहनत और लगन से कार्य करते हुए अपने आप को खुशनसीब मानते हैं।

**श्रमिक जीवन की अभिव्यक्ति –** नागार्जुन आम जनता के कवि है, वह अपनी कविताओं में असहाय मजदूर लोगों के दु:ख – दर्द, समस्या का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। उनका ध्यान काम कर रहे श्रमिकों में है, वह मानते हैं कि मजदूरों के सामने बहुत बड़ा संकट होता है। वे संसाधनों के अभाव में भी लगातार श्रम करते रहते हैं किसी से कोई शिकायत किए बगैर क्योंकि शासन सत्ता का भी ध्यान उनकी ओर नहीं जाता है। और जो उद्योगपति, पूंजीपति वर्ग है वह लगातार उनका शोषण करता रहता है। उन्हें उनके जरूरत का सामान भी उपलब्ध नहीं करवाता। शोषित वर्ग को पता है की अपना और अपने बच्चों का पेट पालने के लिए कार्य करना ही पड़ेगा। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो उनके घर का दाना पानी बंद हो जाएगा। उनकी कविता 'घिन तो नहीं आती है' की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं– □कुली मज़दूर हैं

बोझा ढोते हैं, खींचते हैं ठेला

धूल धुआँ भाप से पड़ता है साबका

थके मांदे जहाँ तहाँ हो जाते हैं ढेर

सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन

आकर ट्राम के अन्दर पिछले डब्बे मैं

बैठ गए हैं इधर उधर तुमसे सट कर



© 2026, IRJEdT

आपस मैं उनकी बतकही

सच सच बतलाओ

जी तो नहीं कढ़ता है?

घिन तो नहीं आती है?

कविता के माध्यम से बताया गया है कि श्रमिकों का जीवन कठिन परिस्थितियों में बीतता है। आए दिन उन्हें कठिन परिश्रम करते हुए यात्राओं का सामना करना होता है। मजदूरी करना कितना कठिन काम है, यह दर्द सिर्फ वही महसूस कर सकते हैं। उनका जीवन श्रम से इतना अधिक जुड़ा हुआ है कि यदि वह थोड़ा विश्राम भी करते हैं तो अंतरमन में वही श्रम गूंजता रहता है। श्रमिक वर्ग उत्पादन और निर्माण की आधारशिला है। यदि वह काम करना बंद कर देंगे तो देश के निर्माण कार्यों की आधारशिला में बहुत प्रभाव पड़ेगा। यहां पर कवि ने पाठक वर्ग से सवाल कर बैठा है कि क्या हम मजदूर को अपने बराबरी का व्यक्ति मानते हैं। या फिर उसकी गरीबी, दुर्गंध व उसके श्रम करते वक्त आए पसीने से हम घृणा करते हैं। यह कविता मजदूरों के चित्रण के साथ-साथ समाज को यह आईना भी दिखती है कि, यदि हमारे मन में उनके प्रति किसी प्रकार की 'घिन' है तो समस्या श्रमिक में नहीं बल्कि हमारी सोच में है।

नागार्जुन की संवेदनशील दृष्टि कि यह कविता सशक्त उदाहरण है कुछ ही शब्दों के माध्यम से वे श्रमिक वर्ग की स्थिति का चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता का मूल स्वर्ण यथार्थवादी है। सजावट की भाषा और कल्पनागत सौंदर्य के बजाय सच्चाई का यथार्थ दर्शित करते हैं–

मकई के मोटे टिक्कड़ को

सतृष्ण नज़रों से देखता रहेगा अभी

इस चालू मार्ग पर

गिट्टियाँ बिछाने वाली मज़दूरिन माँ

अभी एक बजे आएगी

पसीने से लथपथ

निकटवर्ती झरने में

हाथ-मुँह धोएगी


© 2026, IRJEdT

जूड़ा बान्धेगी फिर से

यह कविता श्रमशील स्त्री के संघर्ष, आत्मसम्मान और सामाजिक विषमता की सच्चाई बयां करती है। कवि ने साधारण प्रतीत होने वाले दृश्य में, समाज के सामने गहरी सच्चाई को दिखाया है। कविता पाठक के हृदय में संवेदना जाग्रत करती है। यह सिर्फ एक मजदूर स्त्री की कहानी नहीं बल्कि उस वर्ग की दशा है। जो विकास कार्यों की नींव रखता है, लेकिन खुद जीवन भर उसे हाशिए में रहना पड़ता है। यह मजदूरी कर रही स्त्री की भूख यह बताती है कि विकास का लाभ श्रमिक वर्ग तक नहीं पहुंच पाता। यही आर्थिक, सामाजिक विषमता का संकेत है।

**समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता:–** भारत में आज भी बेरोजगारी, न्यूनतम समर्थन मूल्य, किसान आत्महत्या, श्रमिकों के अधिकार और असंगठित क्षेत्र की समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं। राजनीतिक पाखंड और सामंती व्यवस्था पर उन्होंने अपनी कविताओं के सहारे तीखे व्यंग्य किए हैं। कवि ने ग्रामीण जीवन की दरिद्रता, बेरोजगारी, अकाल, और शोषण को बिना किसी आडंबर के प्रदर्शित किया है। उनकी कविताओं में श्रम को पूजा की भांति दर्शाया गया है। खेतों में काम करते कृषक, मेहनत से जीवन यापन करते मजदूर उनकी रचनाओं के नायक हैं। वे श्रम की सामाजिक मर्यादा और उसके महत्व को बखूबी प्रस्तुत किया है। बाबा नागार्जुन की कविताएं इन प्रश्नों को समझना और समाज के अंदर चेतन जगाने में सहायक होती है। आज भी उनके काव्य के द्वारा श्रमिकों और किसानों के आंदोलन को प्रेरणा मिलती है।

**निष्कर्ष:–** कवि नागार्जुन का काव्य किसान और श्रमिक जीवन का जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने भूख, अकाल, गरीबी, अत्याचार शोषण और संघर्ष को अपनी कविता का विषय बनाया है। उनकी कविता में श्रमिक वर्ग केवल पीड़ित के रूप में नहीं बल्कि परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में सामने आया है। मार्क्सवादी दृष्टि का प्रभाव, जनवादी चेतना का स्वरूप, सामाजिक प्रतिबद्धता, प्रमुख है। बाबा नागार्जुन ने यह सिद्ध किया है कि कविता हाशिए पर खड़े लोगों आवाज बन सकती है। श्रमिक, किसान और अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति के जीवन की अभिव्यक्ति, उनके काव्य को हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान अर्जित करने में सहायक सिद्ध हुई है।

**संदर्भ:**

1.सिंह, डॉक्टर, नामवर 'कविता के नए प्रतिमान' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,2018

2. सिंह, डॉक्टर, नामवर (संपादक), 'नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएं' राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 73

3. जोशी, राजेश, 'नागार्जुन रचना संचयन' साहित्य अकादेमी, प्रकाशन, रविंद्र भवन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 31

4. सिंह, डॉक्टर, नामवर (संपादक), 'नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएं' राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 98

5. नागार्जुन, 'संपूर्ण काव्य रचनाएं' हिंदी कविता वेबसाइट hindi – kavita.com

6. सिंह, डॉक्टर, नामवर (संपादक), 'नागार्जुन प्रतिनिधि कविताएं' राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या– 118

7. जोशी, राजेश, 'नागार्जुन रचना संचयन' साहित्य अकादेमी, प्रकाशन, रविंद्र भवन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 108

8. वही, पृष्ठ संख्या – 112

9. झा, कमलानंद 'दबी दुब का रूपक: नागार्जुन, अवंतिका, प्रकाशन – 2022

10. शुक्ल, रामविलास, हिंदी कविता: समाज और सौंदर्यबोध' इलाहाबाद, लोक भारती, प्रकाशन – 1987

11. पांडे, रामशरण, 'नागार्जुन: व्यक्तित्व और कृतित्व' दिल्ली, साहित्य भवन, 1998



© 2026, IRJEdT 